21-9-18

* धर्मलक्षणविचार => [अथातो धर्म जिज्ञासा]

अथ – वेदाध्ययन की अनन्तरता
अत – वेदाध्ययन की इष्टार्थकता।

चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः।

प्रवर्तकं वाक्यं चोदना, चोदनया यो हि ज्ञायते लक्ष्यते तद् धर्मः।

चोदना = वेद – प्रवर्तना

धर्मज्ञान में प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है, धर्म अलौकिक है अतः प्रत्यक्ष प्रमाण से ज्ञान नहीं होगा।

दया धर्म का लक्षण है यह धर्म को देखकर जाना जाता है।

धर्मो हि विश्वस्य जगत प्रतिष्ठा।

योऽहि २ श्रेयस्करं कर्म तद्धर्मः (भास्कराचार्य)

भोजवार्तिं — धर्म = वेदप्रतिपाद्य, प्रयोजनवान

वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्मः। यागादिरेव धर्मः।

प्रयोजने अतिव्याप्ति वारणाय — श्येनादौ अति०

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। =>

स्व = स्ववेदशाखायाः

अध्याय – गुरुमुखोच्चारणानुच्चारणपूर्वकम् अर्थानुधावनपर्यन्तं स्वाध्यायोऽध्येतव्यः।

धर्मो धारयते प्रजाः।

धर्मशास्त्र के तीन विषय – आचार, व्यवहार, प्रायश्चित

धर्म
├── लौकिक
│   └── समयः पौरुषेयी व्यवस्था
└── वैदिक
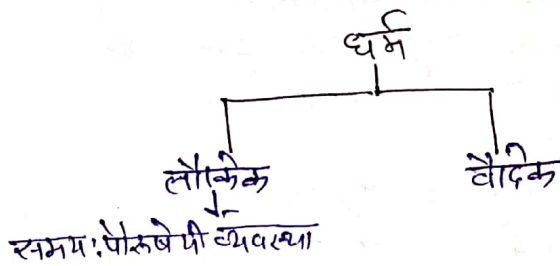
वेदान्त = वेद का जो तात्पर्य बताए, निर्णय बताए,
वेद का अन्तिम भाग – उपनिषद।

लौकिक धर्म = वर्ण, आश्रम, वर्णाश्रम, गुण, नैमित्त, सामान्य।

अर्थसंग्रहः :=> "मीमांसायाः द्वादशसु अध्यायेषु प्रतिपादितानां अर्थानां संग्रहः = अर्थसंग्रहः"

* यजेत स्वर्गकामः =>
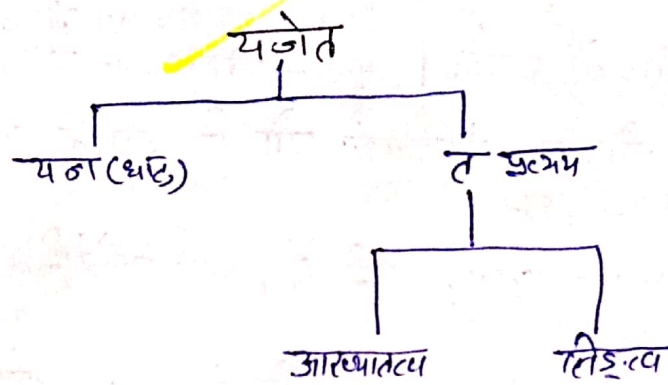
आख्यात = 10 लकारेषु
लिङ्त्व = लिङ् लकार

आख्यात्व एवं लिङ्त्व के द्वारा भावना का बोध होता है।

* भावना => भावना नाम भवितुर्भवनानुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः।

प्रेरयिता का प्रेरित के अनुकूल वह व्यापार जिससे प्रेरित किसी कार्य में प्रवृत्त होता है।

भावना द्विधा => (1) शाब्दी भावना (2) आर्थी भावना

* शाब्दी भावना => तत्र पुरुषप्रवृत्त्यनुकूलो भावयितुर्व्यापारविशेषः शाब्दी भावना।

प्रेरयिता का वह व्यापार जो पुरुष की प्रवृत्ति के अनुकूल हो और तथा वह उसमें प्रवृत्त हो जाए।
यथा – पानी लाओ इस वाक्य को सुनकर प्रेरित व्यक्ति पानी ही लाएगा अन्य वस्तु नहीं उसका इस अनुरूप कार्य के प्रति प्रवृत्त होना ही शाब्दी भावना है।

✓ शाब्दीभावना लौकिक वाक्ये = पुरुषनिष्ठ
✓ " वैदिक वाक्ये = शब्दनिष्ठ (पुरुषाभावात्)

भावना व्युत्पत्ति — भाव्यते अनया इति भावना।
[जिसके द्वारा होने के लिये प्रवृत्त किया जाए]

भावयिता = भावयति इति भावयिता (— जो होने के लिये प्रेरित करता हो,
भविता = भाव्यते इति भविता। जिसे होने के लिये प्रेरित किया जाए
भवन = भवति इति भवनम्। होना ही भवन है।

[भावयिता भावनया भवितारं भावयति।]

* शाब्दी भावना 3 अंश =>

① साध्य = आर्थी भावना ← किं भावयेत्
② साधन = लिङ्गादि ज्ञान ← केन भावयेत्
③ इतिकर्तव्यता = प्राशस्त्यादि (प्रशंसा) ← कथं भावयेत्

* आर्थी भावना = प्रयोजनेच्छाजनितक्रियाविषयव्यापार आर्थीभावना।

स्वर्गादि प्रयोजन को लक्ष्य करके यागादि क्रिया के द्वारा किया गया व्यापार = आर्थीभावना।

* आर्थी भावना 3 अंश =>

① साध्य = स्वर्गादि फल ← किं भावयेत
② साधन = यागादि क्रिया ← केन भावयेत
③ इतिकर्तव्यता = प्रयाजादि क्रियासमूह ← कथं भावयेत

* वेद लक्षण =>

अपौरुषेयं वाक्यं वेदः। (अपौरुषेय वाक्य को वेद कहते हैं)

सच पञ्चविध => ① विधि ② मन्त्र ③ नामधेय ④ निषेध ⑤ अर्थवाद

19-10-18

① विधिप्रकरण =>

* विधि => तत्राज्ञातार्थज्ञापको वेदभागो विधिः।

अज्ञात अर्थ को बताने वाले वेदभाग को विधि कहते हैं।
यह प्रमाणान्तर से अप्राप्त प्रयोजनवान अर्थ का विधान करती है।
उदा. – ["अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः"] इस विधिवाक्य का अर्थबोध – [अग्निहोत्रहोमेन स्वर्गं भावयेत्] इस रूप में होता है।

* गुणविधि – यत्र कर्म मानान्तरेण प्राप्तं तत्र तदुद्देशेन गुणमात्रं विधत्ते।

जहां पर कर्म प्रमाणान्तर से प्राप्त हो वहां पर उस कर्म को उद्देश्य करके केवल गुण का विधान किया जाता है।
उदा. – "[दध्ना जुहोति] यहां पर होमकर्म के "अग्निहोत्रं जुहुयात" इस वाक्य से प्राप्त होने पर होम को उद्देश्य करके दधिमात्र का विधान होता है।
=> "दध्ना होमं भावयेत"।

* विशिष्ट विधि => जहां पर गुणकर्म दोनो विधेयं अप्राप्त हो वहां विशिष्ट विधि होती है। यथा – [सोमेन यजेत]

मत्वर्थलक्षणा => सोमवतायागेनेष्टं भावयेत्।

ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामो यजेत – अधिकारविधि ✓

उद्भिदा यजेत पशुकाम – अधिकारविधि + उत्पत्तिविधि

विधिश्चतुर्विधः =>

(1) उत्पत्तिविधि (2) विनियोगविधि (3) अधिकारविधि (4) प्रयोगविधि।

(1) उत्पत्तिविधिः => तत्र कर्मस्वरूपमात्रबोधको विधिरुत्पत्तिविधिः।

यथा – ["अग्निहोत्रं जुहोति"।]

इस विधि में कर्म का करण के रूप में अन्वय होता है।

=> "अग्निहोत्रहोमेनेष्टं भावयेत्"।

याग के दो रूप => (1) द्रव्य (2) देवता।

(2) विनियोगविधिः => "अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधिः"।

यथा – ["दध्ना जुहोति"।]

इस वाक्य में तृतीया विभक्त्यन्त दध्ना से दधि (अङ्ग) और होम (अङ्गी) का ज्ञान होता है। "दध्ना होमं भावयेत्",

गुणविधि में धात्वर्थ का साध्य के रूप में अन्वय होता है, कहीं-2 आश्रय रूप में भी अन्वय होता है।

यथा – ["दध्नेन्द्रियकामस्य जुहुयात्"] इसमें धात्वर्थ का अन्वय आश्रय रूप में होता है। इसका स्पष्टार्थ है – "दधिकरणत्वेन इन्द्रियं भावयेत्"।

विनियुज्यते इति विनियोगः। (जिसके द्वारा सम्बन्ध स्थापित किया जाए)

* विनियोगविधि के सहकारीभूत छः प्रमाण =>

(1) श्रुति (2) लिङ्ग (3) वाक्य (4) प्रकरण (5) स्थान (6) समाख्या

विनियोगविधि इन छः प्रमाणों की सहायता से अङ्गत्व का बोध कराती है।

अङ्गत्व – पारार्थ्य। [परोद्देशप्रवृत्तकृतिसाध्यत्वम्]

① श्रुति: => "तत्र निरपेक्षो रव: श्रुति:"।

प्रमाणान्तर की अपेक्षा न रखने वाले शब्द को श्रुति कहते हैं।

* यह तीन प्रकार की है —

① विधात्री ② अभिधात्री ③ विनियोक्त्री

↓ लिङ्गादि ↓ व्रीहि आदि ↓ यस्य च शब्दस्य श्रवणादेव सम्बन्ध: प्रतीयते सा विनियोक्त्री।

विधात्री — विधानकर्त्री [लिङ्: विधानं करोति या श्रुति सा विधात्री]
अभिधात्री — अभिधानकर्त्री
~~विनियोक्त्री~~ विनियोक्त्री — विनियोगकर्त्री

* विनियोक्त्री = तीन प्रकार —

① विभक्तिरूपा ② एकाभिधानरूपा ③ एकपदरूपा।

विभक्तिरूपा => "व्रीहिभिर्यजेत"।
यहां पर तृतीया विभक्ति के सुनने पर व्रीहि याग का अङ्ग ज्ञात होता है व्रीहि पुरुडाश की प्रकृति होने से याग का अङ्ग बनते हैं। साक्षात् नहीं।

"अरुणया पिङ्गाक्ष्या एकहायन्या गवा सोमं क्रीणाति।"

यहां पर आरुण्य क्रयण का अङ्ग साक्षात् रूप से नहीं है, अपितु गोरूप पिण्ड के ज्ञापकरूप में है।

~~आरुण्य अमूर्त पदार्थ है~~
आरुण्य अमूर्त पदार्थ है वह साक्षात् क्रयण का अङ्ग नहीं बन सकता।

* विधिवाक्य =>

① व्रीहिभि: यजेत। — 3
② अरुणया पिङ्गाक्ष्या एकहायन्या गवा सोमं क्रीणाति। — 3
③ व्रीहीन् प्रोक्षति। — 2
④ अश्वाभिधानीम् आदत्ते। — 2
⑤ यद् आहवनीये जुहोति। — 7

Scanned with CamScanner

(2) लिङ्ग = शब्दसामर्थ्यं लिङ्गम् । 'सामर्थ्यं सर्वशब्दानां लिङ्गमित्यभिधीयते।
समाख्या से रुद्रात्मक लिङ्ग शब्द भिन्न होता है।
• बर्हिर्देवसदनं दामि'। – यह मन्त्र 'कुशलवन' क्रिया का अङ्ग है।

(3) वाक्य = 'समभिव्याहारो वाक्यम्।
उदा० – "यस्य पर्णमयी जुहूर्भवति न स पापं श्लोकं शृणोति"।
=> "पर्णतयावत्तहविर्धारणद्वारा जुहूपूर्वं भावयेत्"।

प्रकृतिः = यत्र समग्राङ्गोपदेशः सा प्रकृतिः। यथा – दर्शपूर्णमासादि:।
विकृतिः = यत्र न समग्राङ्गोपदेशः सा विकृतिः। यथा – सौर्यादि।
इन्द्राग्नी इदं हविः। – यह मन्त्र वाक्य प्रमाण से दर्श नामक यश का
अङ्ग होता है।

(4) प्रकरण = "उभयाकाङ्क्षा प्रकरणम्"। यथा – प्रयाजादिषु – 'समिधो यजति'।
[दो वाक्यों की परस्पर आकाङ्क्षा] 'समिधागेन भावयेत्'।
दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गकामो यजेत। – दर्शपूर्णमासाभ्यां स्वर्गं भावयेत्।

प्रकरणं द्विविधम् – (1) महाप्रकरणम् (2) अवान्तरप्रकरण।
(1) महाप्रकरणम् – मुख्यभावनासम्बन्धिप्रकरणं। – प्रकृति याग में ही।
(2) अवान्तरप्रकरणम् – अङ्गभावनासम्बन्धिप्रकरणमवान्तरप्रकरणम्। तच्च सन्दंशेनैव ज्ञायते। (इस प्रकार के अङ्गत्व का बोध सन्देश के द्वारा होता है)

सन्दंश – एकाङ्गानुवादेन विधीयमानयोरङ्गयोरन्तराले विहितत्वं सन्दंशः।
यथा – समानयते जुहूम् उपभृतस्तेजो वा।

(5) स्थान – देशसामान्यं स्थानम् – तद्द्विविधं –

(1) पाठसादेश्य
- यथासङ्ख्य पाठ
- सन्निधि पाठ

(2) अनुष्ठानसादेश्य
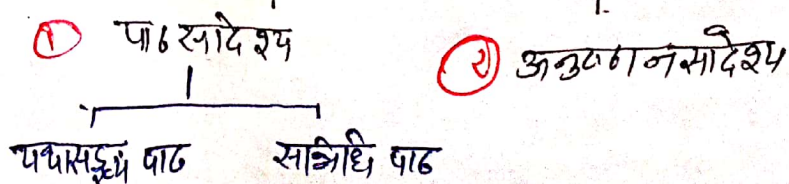
(6) समाख्या = समाख्या यौगिकः शब्दः, सा च द्विविधा वैदिकी लौकिकी च

समाख्या
- वैदिकी
- लौकिकी

सन्निपत्योपकारक = कर्माङ्ग द्रव्याद्युद्देशेन विधीयमानं कर्म सन्निपत्योपकारकम्। यथावघातप्रोक्षणादि।

(3)
- दृष्टार्थ
- अदृष्टार्थ
- दृष्टादृष्टार्थ

आरादुपकारक = द्रव्याद्यनुद्दिश्य केवलं विधीयमानं कर्म आरादुपकारकम्।
यथा – प्रयाजादि।

(3) प्रयोगविधि = प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः प्रयोगविधिः।
सहकारि => (6)

(1) अर्थक्रम – यत्र प्रयोजनवशेन क्रमनिर्णयः सोऽर्थक्रमः।
यथा – अग्निहोत्रं जुहोति, यवागूं पचति।

(2) पाठक्रम – पदार्थबोधकवाक्यानां यः क्रमः स पाठक्रमः।
पाठो द्विविधः
- मन्त्रपाठ
- ब्राह्मणपाठ

(3) स्थानक्रम – स्थानं नामोपस्थितिः।
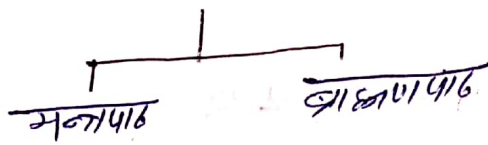
(4) मुख्यक्रम – प्रधानकर्मणोऽङ्गानां क्रमः स मुख्यक्रमः।
(5) मुख्यक्रम पाठक्रमाद्दुर्बलः => स च मुख्यक्रमः पाठक्रमाद्दुर्बलः।
(6) प्रवृत्तिक्रम – सहप्रयुज्यमानेषु प्रधानेषु सन्निपातिनामङ्गानामावृत्त्या – नुष्ठाने कर्तव्ये द्वितीयादिपदार्थानां प्रथमानुष्ठितपदार्थक्रमाद् यः क्रमः स प्रवृत्तिक्रमः।

(4) अधिकारविधि = कर्मजन्यफलस्वाम्यबोधको विधिरधिकारविधिः।
यथा – यजेत स्वर्गकामः।
[यस्याहिताग्नेरग्निर्गृहान् दहेत् सोऽग्नये क्षामवतेऽष्टाकपालं निर्वपेत्। 7
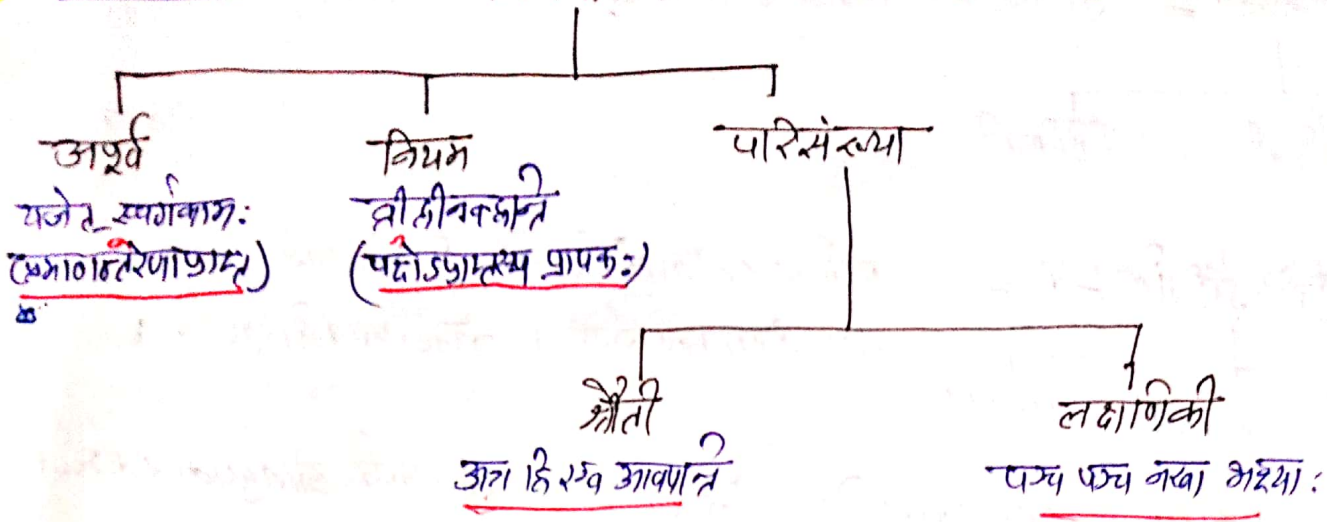
1 मन्त्रप्रकरण =>
नियमविधि - मन्त्रैरेव स्मर्तव्यम्।
अपूर्व
यजेत स्वर्गकामः
(प्रमाणान्तरेणाप्राप्त)
नियम
व्रीहीनवहन्ति
(पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापकः)
परिसंख्या
श्रौती
अत्र हि एव आवपन्ति
लक्षणिकी
पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः
परिसंख्याया दोषत्रयम्
1 श्रुतहानि 1 अश्रुतकल्पना 1 प्राप्तबाध
* पञ्चपञ्चनखा भक्ष्याः = तीन दोष प्राप्त
* इनमें प्रथम दो दोष = शाब्दसम्बन्ध (शब्दगत)
* तीसरा दोष = अर्थनिष्ठ
2 नामधेय प्रकरण =>
नामधेय निमित्तचतुष्टयम्
मत्वर्थलक्षणाभयात्
(उद्भिदा यजेत पशुकामः)
वाक्यभेदभयात्
(चित्रया यजेत पशुकामः)
तत्प्रख्यशास्त्रात्
(अग्निहोत्रं जुहोति)
तद्व्यपदेशात्।
(श्येनेनाभिचरन् यजेत)

(५) निषेध ⇒ पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यं निषेधः।

उदा. ⇒ [कलञ्जं न भक्षयेत्]।

नञर्थेन शब्दभावनायाः अन्वयः, नञ् भा० निरूपण,
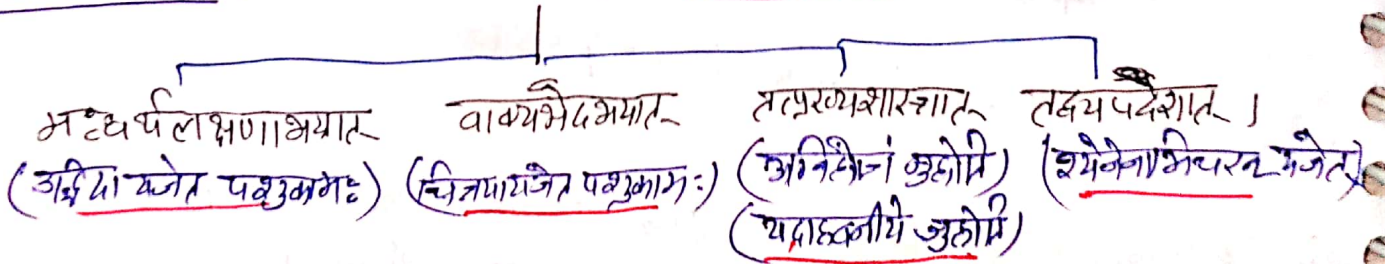
* नञर्थेन प्रत्ययार्थस्यान्वये द्विविधं बाधकं ⇒

① तस्य व्रतम् उपक्रम ② विकल्पप्रसक्ति।

[अर्थवाद] =>
÷ अर्थवाद के दो प्रभेद ÷
विधिशेष
वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता
वायव्यं श्वेतमालभेत भूतिकामः
निषेधशेष
सोऽरोदीत
बर्हिषि रजतं न देयम्
÷ अर्थवाद के तीन प्रभेद ÷
गुणवाद
अनुवाद
भूतार्थवाद
विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते ।
भूतार्थवादस्तद्धानादर्थवादस्त्रिधा मतः ॥

* अर्थवाद => [प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यमर्थवादः।]
  प्रशंसापरक अथवा निन्दापरक वाक्य को अर्थवाद कहते हैं।

* गुणवाद – [प्रमाणान्तरविरुद्धार्थबोधको गुणवादः।] – [आदित्यो यूपः।]
  जिस अर्थवाद का दूसरे प्रमाण से विरोध होता है।

* अनुवाद – [प्रमाणान्तरप्राप्त्यर्थबोधकोऽनुवादः।] – [अग्निर्हिमस्य भेषजम्।]
  जिसके अर्थ का ज्ञान प्रमाण से प्राप्त होता है।

* भूतार्थवाद – [प्रमाणान्तरविरोधतत्प्राप्तिरहितार्थ बोधको भूतार्थवादः।] – [इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदयच्छत्]
  जिसका दूसरे प्रमाण से विरोध भी न हो रहा हो, और जिसके द्वारा प्रतिपादित अर्थ का बोध अन्य प्रमाण से भी सम्भव न हो।
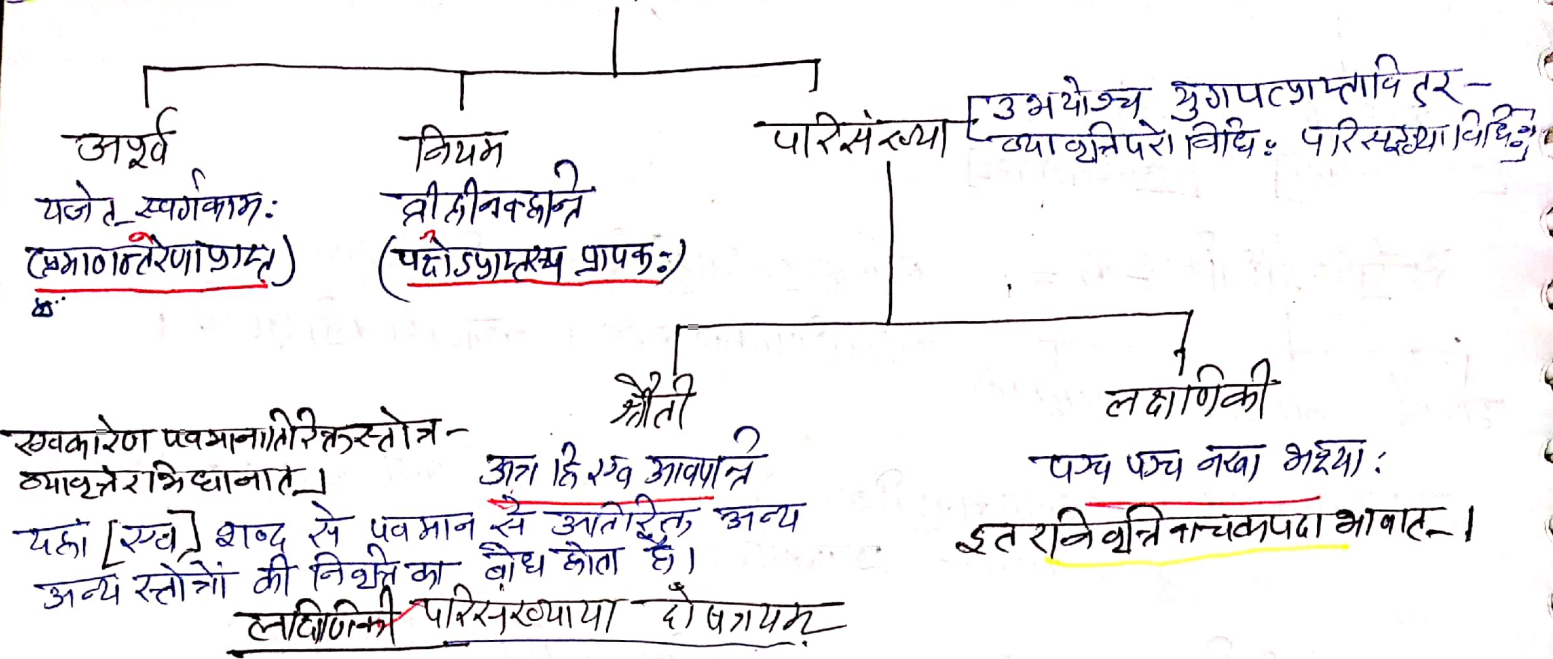
(4) मन्त्रप्रकरण =>

नियमविधि - मन्त्रैरेव स्मर्तव्यम्।

- अपूर्व — यजेत स्वर्गकामः (प्रमाणान्तरेणाप्राप्त)
- नियम — व्रीहीनवहन्ति (पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापकः)
- परिसंख्या — [उभयोश्च युगपत्प्राप्तावितर-व्यावृत्तिपरो विधिः परिसंख्याविधिः]
  - श्रौती — अत्र हि एव अवयन्ति
  - लाक्षणिकी — पञ्च पञ्चनखा भक्ष्याः — इतरनिवृत्तिवाचकपदाभावात्।

एवकारेण पवमानातिरिक्तस्तोत्र-व्यावृत्तेरभिधानात्।
यहाँ [एव] शब्द से पवमान से अतिरिक्त अन्य अन्य स्तोत्रों की निवृत्ति का बोध होता है।

लाक्षणिकी परिसंख्यायां दोषत्रयम्

① श्रुतहानि ② अश्रुतकल्पना ③ प्राप्तबाध

* पञ्चपञ्चनखा भक्ष्याः = तीन दोष प्राप्त
* इनमें प्रथम दो दोष = शाब्दसम्बन्धी (शब्दगत)
* तीसरा दोष = अर्थनिष्ठ

(5) नामधेय प्रकरण =>

नामधेय निमित्तचतुष्टयम्

- मत्वर्थलक्षणाभयात् (उद्भिदा यजेत पशुकामः)
- वाक्यभेदभयात् (चित्रया यजेत पशुकामः)
- तत्प्रख्यशास्त्रात् (अग्निहोत्रं जुहोति) (यदाहवनीये जुहोति)
- तद्व्यपदेशात्। (श्येनेनाभिचरन् यजेत)
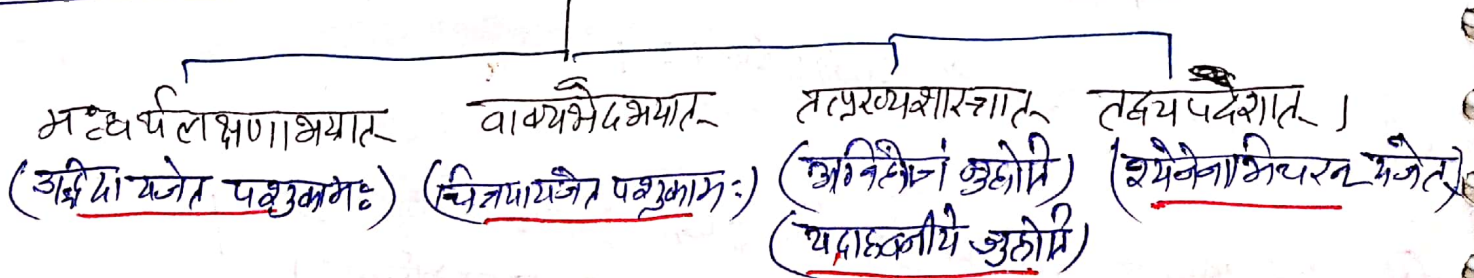
पाँचवा निमित्त =>

उत्पत्तिगुणबलीयस्त्व => अ. वैश्वदेवेन यजेत। (याग का नामधेय)

(५) निषेध => पुरुषस्य निवर्तकं वाक्यं निषेधः।

उदा- => [कलञ्जं न भक्षयेत]।

नञर्थेन शब्दभावनाया अन्वयः, नञ भावनिरूपण,

* नञर्थेन प्रत्ययार्थस्यान्वये द्विविधं बाधकं =>

① तस्य व्रतम उपक्रम (प्रारम्भ) ② विकल्पप्रसक्ति (आपत्ति)।

↓ [नेक्षेतोद्यन्तमादित्यम्] ↓ [यजतिषु ये यजामहं करोति नानुयाजेषु]

=> [नातिरात्रे षोडशिनं गृह्णाति] => यहाँ पर्युदास का ग्रहण नहीं किया गया क्योंकि